Lecture Notes

Lecture - 1.

PG IV sem
Unit - EC

Topic —

Problems & goals of org. Psy.

Dr. Kumari Sadhana Prasad
Associate Prof.
Dept. of Psychology

Q:(1) Discuss the problems & goals of Organisational Psychology.

Ans:— संगठन से तात्पर्य होता है कुछ व्यक्तियों के द्वारा निर्मित अनऔपचारिक तथा औपचारिक ऐसे समूह जिसमें वह संगठित रूप से कुछ कर सकता है। व्यक्ति अकेला बहुत सीमित रहता है और उसे बहुत तरह के कार्यों की क्षमता नही रहती; परन्तु संगठन के रूप में वह जटिल कार्यों को भी पारस्परिक सहयोग, सहकारिता तथा समायोजन के आधार पर करने में समर्थ हो जाता है। वर्तमान समय में कुछ संगठनों (Organisationals) के उदाहरण हैं:— Schools, clubs, communities, groups, Companies, Business concerns, Government agencies, Hospitals, Political parties, churches, आदि। अत: सबसे बड़ा संगठन इस संदर्भ में (Society) समाज है जहाँ विविध प्रकार के व्यक्ति का ~~अन्त पारस्परि~~ अन्तर्पारस्परिक कार्य (Inter personal activities) तथा सहयोग (Cooperation) देखा जाता है। अत: Schein (1983) के शब्दों में :—

"It is difficult to give a simple ~~en~~ definition of an org. as several people coordinate their efforts. However they find that together they can do more than any of them could have singly. One basic idea underlying the concept of org. then is the idea of coordination of efforts in the service of mutual help."

Schein ने एक संगठन org के लिए सहयोग के साथ-साथ सामान्य लक्ष्य (Common goal या objective) को आवश्यक माना है। इस तरह एक संगठन org के भीतर सभी

व्यक्ति कार्यों के वितरण (Division of labour) और सामान्य उद्देश्य (common goal) की प्राप्ति के लिए सहयोग को आवश्यक तथा औपचारिक माना है। अतः Schein ने Org. की व्याख्या निम्न प्रकार किया है :—

"एक संगठन बहुत से व्यक्तियों के योजनाबद्ध ढंग से कार्यों का सहयोग है जिसे कुछ सामान्य बाह्य लक्ष्यों या उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए संगठित किया जाता है। संगठन Org. कार्य-विभाजन तथा दायित्वों और पद क्रम के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करता है।"

संगठन की समस्याएँ तथा उद्देश्य

Problems & Goals of Organisation:

संगठन (Org.) की अनेक समस्याएँ होती हैं। जिन्हें Schein ने अपने ढंग से निम्न प्रकार वर्गीकृत किया है :—

1. किसी संगठन Org. की रचना करना, तथा उसका अभिकल्प तैयार करना।

2. मानव-साधनों के बहाली, चयन, प्रशिक्षण, सामाजीकरण तथा कार्य-वितरण की समस्या।

3. व्यक्ति तथा संगठन Org. के मनोवैज्ञानिक संबंध से उत्पन्न समस्या तथा उनका स्वरूप।

4. संगठन Org. के जटिल विविध इकाइयों के सहयोग तथा पारस्परिक संवाद की समस्या।

5. संगठन Org. की आवश्यकताओं से उत्पन्न समस्या।

(1) संगठन की रचना तथा अभिकल्प — एक संगठन की रचना कैसी होती है एक संगठन Org. चाहे वह School हो या Tata का इस्पात का कारखाना, एक राजनीतिक दल हो या एक सरकारी संस्था, सबके लिए यह प्रारम्भिक समस्या के रूप में खड़ा होता है। अगर इस स्तर पर संगठन की रचना ठोस हुई तो वह अपने उद्देश्यों—
(a) विकास (growth) (b) प्रगति (Development)
(c) अस्तित्व रक्षा (Survival),

की प्राप्ति कर सकता है। एक उद्योगपति (Entrepreneur) ही संगठन Org. की रचयिता होता है। वह संगठन (Org.) का संस्थापक होता है। वह संगठन

उद्योगपति
Entrepreneur

रूप सँवारता है उसके विभिन्न (Component अवयवों) को संगठित करता है; जैसे — संगठन के लिए विभिन्न पदाधिकारियों तथा कर्मचारियों तथा विविध प्रकार के मशीनों को वह संगठित करता है, जोखिम उठाता है। अतः इस प्रारम्भिक स्तर पर इन प्रक्रियाओं से संबद्ध अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं, जिनका वह समाधान करता है। संक्षेप में, इस स्तर पर उसे तीन महत्वपूर्ण समस्याओं का सामना करना पड़ता है —

(a) बहाली की समस्या (Recruitment Problem of)
(b) प्रशिक्षण की समस्या (Problem of training)
(c) नए कार्यकर्ताओं की बहाली की समस्या। (Problem of hiring new employees)

② चयन, प्रशिक्षण तथा सामाजीकरण के मानव स्रोतों या संसाधन की समस्या:—

इस समस्या का दो व्यापक रूप होता है, पहला, किस प्रकार संगठन (Org.) के लिए नए कर्मचारियों की बहाली, चुनाव प्रशिक्षण तथा सामाजीकरण किया जाए। उनका काम पर इस प्रकार वितरण किया जाए कि इससे उनकी आशाओं तथा आकांक्षाओं की ठीक तरह पूर्ति हो। दूसरा, किस तरह की नीति अपनाई जाए या काम के अनुसार व्यक्ति का चयन किया जाए। और, दूसरी नीति यह होती है कि किस प्रकार काम को ही फिर से नया रूप दिया जाए जो आदमी की शक्ति एवं सीमाओं के ~~अनुसार~~ अनुरूप हो। पहली नीति के अनुसार पहले मशीनों का निर्माण होता था जिसके अनुकूल कार्यकर्ता (Worker) को अपना समायोजन (adjustment) करना पड़ता था। अब कार्यकर्ता (Worker) की शारीरिक क्षमता तथा सीमाओं को ध्यान में रख कर मशीनों का प्रारूप (design) किया जाता है जिसे Human engineering कहते हैं। अतः एक संगठन में व्यक्ति तथा संगठन के अन्तक्रिया के रूप में उठनेवाली विविध समस्याएं उसके अन्तर्गत आती है।